टाभामंडल

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्राणियों का शरीर दो प्रकार का होता है– स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। स्थूल शरीर जन्म के बाद जो शरीर सामने दिखाई देता है, वह स्थूल शरीर होता है। इसी के द्वारा सांसारिक कार्य किये जाते हैं। इसी शरीर को सांसारिक दुखों से गुजरना पडता है। हमारे शरीर के चारों तरफ जो ऊर्जा का क्षेत्र है वही सूक्ष्म शरीर है। सूक्ष्म शरीर ने हमारे स्थूल शरीर को घेर रखा है। इसे जीवनी शक्ति या प्राण शक्ति भी कहते हैं। इसका कार्य सारे शरीर में एवं सूक्ष्म नाडियों में वायु प्रवाह को नियंत्रित करना तथा सूक्ष्म ऊर्जा प्रदान कर शरीर को क्रियाशील रखना है प्राण के निकल जाने पर शरीर मृत हो जाता है एवं प्राण के कमजोर होने पर शरीर कमजोर होता जाता है तथा बीमारियों से लडने की शक्ति समाप्त होने लगती है।

अपने इष्ट देव की मूर्ति या पोस्टर सभी मनुष्य अपने घर या कार्यस्थल पर अवश्य रखते हैं। इन मूर्ति या पोस्टर में जो भी देव हैं उनके मस्तिष्क के बराबर पीछे की ओर सप्तरंगीय ऊर्जा तरंगे निष्कासित होती रहती हैं। वह एक गोलीय चक्र सा प्रतिबिंब रहता है। वही उनका आभामण्डल या ओरा चक्र होता है। यह आभामण्डल जीव मात्र– मनुष्य, जीव–जंतु, पशुओ, पेड़–पौधों, पदार्थों के इर्द–गिर्द एक प्रकाश पुंज रहता है। प्रत्येक मनुष्य का अपना एक आभामण्डल या ओरा होता है। जिसके कारण से ही दूसरे अन्य मनुष्य उससे प्रभावित होते हैं। यह आभा मनुष्य के संपूर्ण शरीर से सतरंगी किरणों के रूप में अंडाकार रूप में उत्सर्जित होती रहती है।

ओरा या आभामंडल प्राणी के शरीर से निकलने वाली प्रज्वलित शक्ति किरणे हैं, जिसकी ऊर्जा हर व्यक्ति में रहती है। इस प्रभामंडल का संचालन हमारे शरीर के 7 चक्र करते हैं, और ये चक्र हमारी मानसिक शारीरिक, भावनात्मक इत्यादि कई कडियो से जुडकर ओरा के रूप मे

हमारे वर्तमान वक्त के दर्पण को तैयार करते हैं। जिसे देखकर और उसमे जरूरत के अनुसार बदलाव लाकर हम आने वाली, या तत्कालिक समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

इसको संचालित करने वाले चक्र हैं– मूलाधार चक्र। इसका रंग लाल है और इसका सम्बन्ध हमारी शारीरिक अवस्था से होता है। इस चक्र के ऊर्जा तत्व मे असंतुलन, रीढ की हड्डी मे दर्द होना, रक्त और कोशिकाओ पर तथा शारीरिक प्रक्रियाओ पर गहरा असर डालता है। स्वाधिष्ठान चक्र का रंग नारंगी है और इसका सीधा संबन्ध प्रजनन अंगो से है। इस चक्र के ऊर्जा असंतुलन के कारण इंसान के आचरण, व्यवहार पर असर पडता है। मणिपुर चक्र का रंग पीला है और यह बुद्धि और शक्ति का निर्धारण करता है। इस चक्र मे असंतुलन के कारण व्यक्ति अवसाद मे चला जाता है, दिमागी स्थिरता नही रह जाती। अनाहत चक्र का रंग हरा है और इसका संबन्ध हमारी प्रभामंडल की शक्तिशाली नलिकाओ से है। इसके असंतुलित होने के कारण, इसान का भाग्य साथ नही देता, पैसो की कमी रहती है, दमा, यक्ष्मा और फेफडे से समबन्धित बीमारियों से सामना करना पड सकता है। विशुद्ध चक्र का रंग हल्का नीला है और इसका सम्बन्ध गले से और वाणी से होता है। इसमे असंतुलन के कारण वाणी मे ओज नही रह पाता, आवाज ठीक नही होती,टांसिल जैसी बीमारियो से सामना करना पडता है।

आज्ञा चक्र गहरे नीले रंग का है। ये चक्र दोनो भौहो के बीच मे तिलक लगाने की जगह स्थित है। इसका अपना सीधा सम्बन्ध दिमाग से है। इस चक्र को सात्विक ऊर्जा का पट भी मानते हैं। अगर परेशानियाँ बहुत ज्यादा हों तो सीधे आज्ञाचक्र पर ऊर्जा देने से सभी चक्रों को संतुलन मे लाया जा सकता है। सहस्रार चक्र सफेद रंग के सौ दलो मे सजा ये चक्र सभी चक्रो का राजा है। कुंडलनी शक्ति जागरण मे इस चक्र की अहम भूमिका हैं, जिस व्यक्ति मे यह चक्र संतुलित हो वह सम्पूर्ण शक्तियों का मालिक होता है। आभामंडल को ऊर्जावान करके सभी विकारों को दूर किया जा सकता है। इन्सान की व्यक्तिगत अच्छाइयों, कर्मो से आभा मण्डल विकसित होता है। सद्पुरुषों, महापुरुषों , विशेषज्ञों के आभा मण्डल 30 से 50 मीटर तक पाये गये हैं।

हमारे जीवन में भौतिक सुख–सुविधा के साधन मोबाईल, इलेक्ट्रिक एवं इलेक्ट्रोनिक्स साधन हैं, ये एक मैग्नेटिक ऊर्जा का निर्माण कर विकिरण पैदा करते हैं। मोबाईल, फ्रीज, एसी, टी.वी.,

कंप्यूटर आदि अन्य सभी से नेगेटिव ऊर्जा निकलती है, जो हमें नुकसान पहुंचाती रहती है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, अहंकार छः मनुष्य के शत्रु हैं। व्यक्ति द्वारा इन छः दोषों में संलग्न होने से आभामण्डल क्षीण या कम होता जाता है। हम निरंतर एक दूसरे को भला बुरा कहते रहते हैं। एक दूसरे को डाटते–फटकारते रहते हैं। निरंतर अपने नकारात्मक भाव व विचार क्रोध–आक्रोश भय चिंता, विवशता आदि दूसरों को संप्रेषित करते रहते हैं। आभामण्डल की ऊर्जा तरंगे टूट जाती हैं तथा आभामण्डल के कमजोर होते ही व्यक्ति में सोचने–समझने की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। एक साधारण इंसान का ओरा या आभामण्डल 2 से 3 फीट तक माना जाता है। आभामण्डल का आवरण इस माप से नीचे जाने पर व्यक्ति मानसिक व भौतिक रूप से विकृत हो जाता है या टूटने लगता है।